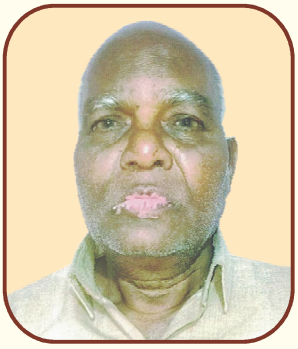

SHRI BABURAM YADAV

Shri Baburam Yadav is a craft person from Moradabad district in Uttar Pradesh.

2. Born on 16th February, 1949, Shri Yadav took inspiration from his father, who himself used to do electroplating work on brass utensils as well as handicrafts. Shri Yadav learned the work of engraving on brass. In 1960, he came to learn the work of engraving from Guru Maqbool Hussain. After that he learned work in the District industries Center Moradabad in 1962-1963. He learned engraving work for 10 years from his Guru Shri Amar Singh. After 25 years of rigorous labour, he received his first state award in 1987 and National Certificate of Merit in the year 1991. He participated in various Handicraft like, Indian Handicraft Festival Show in Kanpur Mahotsav Mela, Lucknow Mahotsav Dastkar Mela Handicrafts Exhibition, Saifai Mahotsav etc.

3. Shri Yadav performed at Mertanic in France in the year 2005 and also performed in Algeria in the year 2014. A number of people came to Algeria/France and were very happy to see the display of handicrafts. Similarly, he performed in Sri Lanka in 2009 and Bangladesh in 2010.

4. Shri Yadav, taught the work of carving to 160 girls and 730 boys for free. He has conducted several training programs on engraving brass. He participated in a scheme under skill development scheme and taught the work of carving to boys and girls. He attended Shilp Gram in Hyderabad 14 times. 5 of his trained boys have got State Award and 3 have got National Award.

5. Shri Yadav is the recipient of numerous awards and honours. He got his first State awards in 1987 and National certificate of Merit in 1991. The Government of India conferred on him "Shilp guru" in 2014.

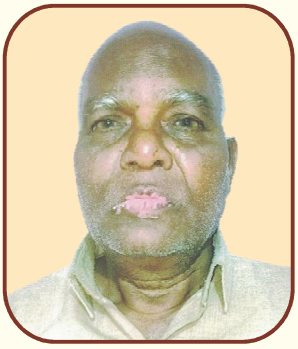

श्री बाबूराम यादव

श्री बाबूराम यादव उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के एक शिल्पकार हैं।

2. 16 फरवरी 1949 को जन्मे, श्री यादव ने पीतल के बर्तनों पर इलेक्ट्रोप्लेटिंग और हस्तशिल्प कार्य करने वाले अपने पिता से प्रेरणा ली। श्री यादव ने पीतल पर नक्काशी का काम सीखा। 1960 में गुरु मकबूल हुसैन से नक्काशी का काम सीखने आए। इसके बाद उन्होंने 1962–1963 में जिला उद्योग केंद्र मुरादाबाद में काम सीखा। उन्होंने अपने गुरु श्री अमर सिंह से 10 वर्षों तक नक्काशी का कार्य सीखा। 25 वर्षों के कठोर परिश्रम के बाद, उन्हें 1987 में अपना पहला राज्य पुरस्कार और वर्ष 1991 में राष्ट्रीय योग्यता प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। उन्होंने कानपुर महोत्सव मेले के भारतीय हस्तशिल्प महोत्सव, लखनऊ महोत्सव दस्तकार मेला, सैफई महोत्सव आदि विभिन्न हस्तशिल्प मेलों में भाग लिया।

3. श्री यादव ने वर्ष 2005 में फ्रांस के मेर्टेनिक में और वर्ष 2014 में अल्जीरिया में भी अपना काम प्रदर्शित किया। कई लोग अल्जीरिया/फ्रांस आए और उनकी हस्तशिल्प कृतियों देखकर बहुत खुश हुए। इसी तरह, उन्होंने 2009 में श्रीलंका और 2010 में बांग्लादेश में भी अपनी कला का प्रदर्शन किया।

4. श्री यादव ने 160 लड़कियों और 730 लड़कों को मुफ्त में नक्काशी का काम सिखाया। उन्होंने पीतल पर नक्काशी पर कई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं। उन्होंने कौशल विकास योजना के तहत एक योजना में भाग लिया और लड़के–लड़कियों को नक्काशी का काम सिखाया। उन्होंने हैदराबाद के शिल्प ग्राम में 14 बार भाग लिया। उनके प्रशिक्षित लड़कों में से 5 को राज्य पुरस्कार और 3 को राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है

5. श्री यादव को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें अपना पहला राज्य पुरस्कार 1987 में और राष्ट्रीय योग्यता प्रमाण पत्र 1991 में मिला। भारत सरकार ने उन्हें 2014 में "शिल्प गुरु" के रूप में सम्मानित किया।